11 सरजू भैया

सरजू मैया नहीं, सरजू भैया । यह हमारे गाँवों की विशेषता है कि कभी-कभी मर्द गंगा, यमुना या सरजू हो जाते हैं । इस बारे में औरतें ही सौभाग्यशालिनी हैं, प्राय: उनके नामों में ऐसे अनर्थ नहीं होते ।

हाँ, तो सरजू भैया ! मेरे घर से सटा हुआ जो एक घर है- एक तरफ दो खपड़ैल मकान, एक तरफ मिट्टी की दीवार पर फूस के छप्पर, एक तरफ टट्टी के दो झोंपड़े, एक तरफ मकान नहीं, सिर्फ टट्टी खड़ाकर छोटा-सा आँगन निकला हुआ- उसी घर के सौभाग्यशाली मालिक हैं हमारे सरजू भैया । सरजू भैया के कोई छोटा भाई नहीं रहा और मैंने प्रथम संतान के रूप में ही अपनी माँ की गोद भरी; अत: हम दोनों ने परस्पर एक नाता जोड़ लिया है। वह मेरे बड़े भाई है और मैं उनका छोटा भाई ।

गाँव के सबसे लम्बे और दुबले आदमियों में सरजू भैया की गिनती हो सकती है। रंग साँवला, बगुले-सी बड़ी-बड़ी टाँगें, चिम्पांजी की तरह बड़ी-बड़ी बाँहें ! कमर में धोती पहने, कन्धे पर अँगोछा डाले, जब वह खड़े होते हैं, आप उनकी पसलियों की हड्डियाँ गिन लीजिए। नाक खड़ी, लम्बी। भौंहे सघन। बड़ी-बड़ी आँखें कोटरों में धँसी । गाल पचके। अंग-अंग की शिराएँ उभड़ी। कभी-कभी मालूम होता है, मानो ये नसें नहीं, उनके शरीर को किसी ने पतली डोरों से जकड़ रखा है।

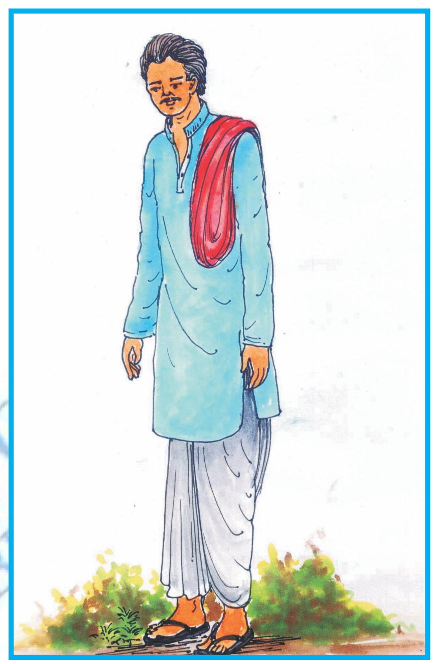

ऊपर की तस्वीर नि:सन्देह किसी भूखमरे, मनहूस आदमी की मालूम होती है। किन्तु क्या बात ऐसी है? सरजू भैया मेरे गाँव के चंद जिन्दादिल लोगों में से एक हैं। मिलनसार, मजाकिया और हँसोड़ । वह दिल

खोलकर हँसते हैं। शरीर भर में जो सबसे छोटी चीज उन्हें मिली है वे उनके पंक्तिबद्ध छोटे-छोटे दाँतें, सब बेतहाशा चमक पड़ते हैं, अंग-अंग हिलने-डुलने लगते हैं; जैसे हर अंग हँस रहा हो। और सरजू भैया के पास इतनी सम्पत्ति है कि वह खुद या अपने परिवार के ही पेट नहीं भर सकते, आगत-अतिथि की सेवा-पूजा भी बड़े मजे में कर सकते हैं ।

तो फिर हड्डियों का ढाँचा क्यों ? मैं जवाब में एक पुरानी कहावत पेश करूँगा- काजी जी दुबले क्यों? शहर के अंदेशे से?

हाँ, सरजू भैया की यह जो हालत है, वह अपने कारण नहीं, दूसरे के चलते। पराए उपकार के चलते उन्होंने न सिर्फ अपना शरीर सुखा लिया है, बल्कि अपनी संपत्ति की भी कम हानि नहीं की है।

उनके पिताजी मेरे गाँव के अच्छे किसानों में से थे। साफ-सुन्दर उनका मकान और अच्छा-खासा बैठकखाना था, जहाँ आज सरजू भैया की राममड़ैया है। खेतीबारी तो थी ही, रुपए और गल्ले का अच्छा लेन-देन था। लेकिन, उनके मरते ही सरजू भैया ने लेन-देन चौपट किया, बाढ़ ने खेती बरबाद की और भूकम्प ने घर का सत्यानाश किया। उनका लेन-देन इतना अच्छा था कि शायद खेती को भी सम्हाल देता, घर भी खड़ा कर सकता था। किन्तु, सरजू भैया और लेन-देन !

लेन-देन, जिसे नग्न शब्दों में सूदखोरी कहिए, चाहता है, आदमी आदमीपन खो दे; वह जोंक-खटमल नहीं, चीलर बन जाए। काली जोंक और लाल खटमल का स्वतंत्र अस्तित्व है। हम उनका खून चूसना महसूस करते हैं। हम उनमें अपना खून प्रत्यक्ष पाते और देखते हैं। लेकिन चीलर गंदे कपड़े में, उन्हीं-सा काला-कुचैला रंग लिए, वह चुपचाप पड़ा रहता है और हमारे खून को यों धीरे-धीरे चूसता है और तुरंत उसे अपने रंग में बदल देता है कि उसका चूसना हम जल्द अनुभव नहीं कर पाते और अनुभव करते भी हैं, तो जरा-सी सुगबुगी या ज्यादा से ज्यादा चुनचुनी मात्र। और अनुभव करके भी उसे पकड़ पाने के लिए तो कोई खुर्दबीन चाहिए।

सरजू भैया चीलर नहीं बन सकते थे। उनके इस लम्बे शरीर में जो हृदय मिला है, वह शरीर के ही परिमाण से। जो भी दुखिया आया, अपनी विपदा बताई, उसे देवता-सा दे दिया, और वसूलने के समय जब वह आँखों में आँसू लाकर गिड़गिड़ाया तो देवता ही की तरह पसीज गए ।

© BSTBPC NOT TO BE REPUBLISHED

सूद कौन कहे, कुछ ही दिनों में मूलधन भी शून्य में परिणत हो गया । उल्टे, अब वह खुद हाथ-हथ-फेर में व्यस्त रहते हैं ।

बाढ़ और भूकम्प ने उनके खेत और घर को बरबाद किया जरूर; लेकिन, सरजू भैया, मेरा यकीन है, आज की फटेहाली से बहुत-कुछ बचे रहते, यदि लेन-देन के बाद भी वह इन दोनों की तरफ ही पूरा ध्यान दिए होते। यह नहीं कि वह जी चुरानेवाले या आलसी और बोदा गृहस्थ हैं। नहीं, ठीक इसके खिलाफ, चतुर, फुर्तीले और काम-काजू आदमी हैं। लेकिन करें तो क्या? उन्हें दूसरे के काम से ही कहाँ फुर्सत मिलती है!

गंगोबाई के घर में बच्चा बीमार है; वैद्य को बुलाने कौन जाएगा? सरजू भैया ! हिरदे को बाजार से कोई सौदा-सुलफ लाना है; वह किसे भेजे? सरजू भैया को! खबर आई है, रामपुकार के मामाजी अपने गाँव में सख्त बीमार हैं; उनकी खोज-खबर कौन लाए? सरजू भैया से बढ़कर दूसरा कौन धावक होगा? परमेसर को एक रजिस्ट्री करनी है; शिनाख्त कौन करेगा? सरजू भैया! यों गाँव भर के लोगों का बोझ अपने सिर पर लेकर सरजू भैया ने न अपने खेत और घर को मटियामेट किया है, बल्कि इसी उम्र में अपनी कमर भी झुका ली है । दिन हो या रात, चिलचिलाती दुपहरिया हो या अँधेरी अधरतिया, सरजू भैया के सेवा-सदन का दरवाजा हमेशा खुला रहता है।

मेरे विचार से सरजू भैया का व्यक्तित्व अनुकरणीय, अनुसरणीय ही नहीं, वंदनीय एवं पूजनीय भी है। जब-जब उन्हें देखता हूँ, मेरा 'ज्ञानी' मस्तक आप-से-आप उनके चरणों में झुक जाता है। लेकिन, मेरे मन में सबसे बड़ी चोट लगती है तब, जब देखता हूँ, इस नर-रत्न की कद्र कहाँ तक होगी ! बहुत-से लोग इन्हें सुधुवा समझकर ठगने की चेष्टा करते हैं । सुधुवापन से ठगे जाने की एक कहानी है ।

बहुत दिन हुए, मैं किसी जरूरत में था । कुछ रुपए के लिए परेशान था। सरजू भैया के पास कुछ रुपए थे। मेरी बेचैनी वह कैसे देखते ? वह रुपए ले आए। मैंने खर्च कर दिया, लेकिन आज तक नहीं दे सका। रुपए तो आए, लेकिन एक आया दो का खर्च लेकर । सरजू भैया माँगने का हाल क्या जानें? मैं भी समझता रहा कि उनके रुपए कहाँ जाते हैं, जरूरत होगी, माँगेंगे, दे दूँगा । लेकिन, अभी उस दिन जो बात उन्होंने सुनाई, मैं हक्का-बक्का रह गया।

© BSTBPC NOT TO BE REPUBLISHED

इस बीच में उन्हें रुपए की जरूरत हुई, लेकिन संकोचवश मुझसे नहीं माँगा । एक सूदखोर महाजन के पास गए, जो पहले उन्हीं से कर्ज खाता था; लेकिन तरह-तरह के कारनामों से अब धन्ना सेठ बन चुका है । उसने झट उन्हें रुपए दे दिए; लेकिन जब चलने लगे, कहा- आपके पास से रुपए जाएँगे कहाँ- लेकिन कोई सबूत तो चाहिए ही। क्या सबूत ? मैं तैयार हूँ- सरजू भैया रुपए बाँध चुके थे, न उन्हें खोलकर लौटाया जा सकता था और न उसकी माँग को नामंजूर कर सकते थे। नहीं, कुछ नहीं, कागज पर सिर्फ निशान बना दीजिए, आपसे बाजाब्ता हैंडनोट क्या तैयार कराया जाए ! और सरजू भैया ने बमभोला की तरह कजरौटे में अँगूठा बोर कर कागज पर चिपका दिया ।

अब वह कहता है- जल्द रुपए दे दो, नहीं तो मैं नालिश कर दूँगा और नालिश कितने की करेगा, कौन ठिकाना- सरजू भैया बेचारगी में बोल रहे थे और मैं उनका मुँह आश्चर्य से देख रहा था। आपने ऐसी गलती क्यों कर दी? लेकिन इसके अलावा वह जवाब क्या देते कि क्या करूँ, रुपए बाँध चुका था।

सरजू भैया के पाँच सन्ताने हुईं, लेकिन बेटियाँ ही बेटियाँ । उनकी धर्मपत्नी लम्बाई में ठीक उनके विपरीत, बहुत ही बौनी होने पर भी बहुत गुणों में उनकी ही तरह थीं, हाल में ही बेटा पाने का अरमान लिए मरी है। कह नहीं सकता, इस अरमान ने सरजू भैया को ज्यादा चिन्तित किया है या नहीं। वे बेटियों पर बहुत ही स्नेह रखते हैं और मेरे घर में जो लड़के मेरे बेटे-भतीजे हैं, उनका बचपन तो ज्यादातर उन्हीं के कंधों पर कटा है। लेकिन बेटियाँ तो अपनी-अपनी ससुराल जा बसेंगी। क्या सरजू भैया की कोई निशानी हमारे पड़ोस को गुलजार न कर सकेगी? यह कल्पना करते ही हमारे परिवार-भर में अजीब उदासी छा जाती है। उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद मैंने अपनी मौसी को कहते सुना- सरजू बबुआ की उमिर कितनी है! यही, मेरे बबुआ से चार बरस बड़े हैं; फिर वह शादी क्यों न करें, क्या वंश डुबा देंगे? और उस दिन देखा, मेरी ढीठ रानी सरजू भैया से झगड़ रही है- नहीं, आपको शादी करनी ही पड़ेगी।

मैं शादी करूँ, जिससे शर्माजी को (मुझे) नई भौजाई से दिन-रात चुहल करने का मजा मिले, क्यों न?

मुझे देखते ही सरजू भैया बोले और ठठाकर हँस पड़े। रानी थोड़ी सकुचायी, फिर हँस पड़ी। मैं दोनों को देखता, चुपचाप मुस्कुराता रहा।

-रामवृक्ष बेनीपुरी

शब्दार्थ :

सघन - घना

काजी - मौलवी, विचारक

खुर्दबीन - सूक्ष्मदर्शी यंत्र

धावक - दौड़नेवाला

सुधुवा - सीधा-सादा

बाजाब्ता - नियमपूर्वक

चुहल - हँसी-मजाक

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. सरजू भैया को जिन्दादिल क्यों कहा गया है?
2. लेन-देन के व्यवसाय में सरजू भैया क्यों सफल नहीं हो सकते थे?
3. चतुर, फुर्तीले और काम-काजू आदमी होते हुए भी सरजू भैया सुखी-संपन्न क्यों नहीं रह सके?
4. सरजू भैया ने सादे कागज पर अँगूठे का निशान क्यों बनाया ?
5. **अपनी शादी की बात सुनकर सरजू भैया ठठाकर क्यों हँस पड़े ? सही उत्तर में √ चिह्न लगाइए ।**

   (क) यह समझकर कि लोग उनसे हँसी कर रहे हैं?

   (ख) सरजू भैया स्वयं हँसी कर रहे थे ।

   (ग) दूसरी शादी की संभावना पर वह बहुत प्रसन्न हो उठे थे।

   (घ) वह हँस कर बात टालना चाहते थे ।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

पाठ से आगे-

1. 'काजी जी दुबले क्यों? शहर के अन्देशे से' यह कहावत सरजू भैया पर कहाँ तक चरितार्थ होती है?
2. आप जोंक, खटमल और चीलर में सबसे खतरनाक किसे मानते हैं, और क्यों?
3. सरजू भैया की दिन-चर्या से आप कहाँ तक सहमत हैं?
4. "सरजू भैया के सेवा-सदन का दरवाजा हमेशा खुला रहता है।" इस कथन का क्या तात्पर्य है?

व्याकरण-

1. **यदि आपको वाक्य में प्रयुक्त विशेषणों को पहचानने में कठिनाई होती है तो याद रखिए:**

   कैसा, कैसी, कितने, किसका, आदि प्रश्नों से जो उत्तर मिलते हैं, वे विशेषण होते हैं। जैसे-

   बेर कैसा है? & पक्का, खट्टा, मीठा, बड़ा, छोटा इत्यादि ।

   लीची कैसी है ? & बड़ी, मीठी, रसीली इत्यादि ।

   उसने कितने आम खाए ? & एक, दो, दस, बीस इत्यादि ।

   तुमने कितना दूध लिया? & एक ग्लास, आधा लीटर इत्यादि ।

   उपर्युक्त नियमों को ध्यान में रखकर **सरजू भैया** नामक पाठ से दस विशेषण चुनिए ।

2. सरजू भैया के 'सुधुवापन' के कारण ठगे जाने की कहानी उत्तम पुरुष **में लिखिए** ।

© BSTBPC WELCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

Abdiel Solutions
Empowering Technologies